जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

भगवान धर्म की स्थापना नहीं करते; बल्कि धर्म का आश्रय लेकर आत्मा से परमात्मा बनते हैं।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ: 18

वर्ष : 27, अंक : 8 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जुलाई (द्वितीय) 2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये, एकप्रति : 2/-

अष्टाह्निका महापर्व हर्षोल्लासपूर्वक सानन्द सम्पन्न

1. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में अष्टाह्निका पर्व के शुभअवसर पर दिनांक 25 से 2 जुलाई, 2004 तक सिद्धचक्रमहामण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराये गये।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के विधान की जयमाला पर मार्मिक प्रवचन हुए एवं रात्रि में पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री के भावदीपिका पर प्रवचन हुये। **ह्न प्रवीण शास्त्री**

2. इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री पंच बालयती एवं विहरमान 20 तीर्थंकर जिनालय साधनानगर में पर्व के अवसर पर सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य विधानाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के निर्देशन में पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित प्रशांतजी मोहरे सोलापुर एवं पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली द्वारा सम्पन्न कराये गये।

दोनों समय प्रारंभ के चार दिन पण्डित अनिलजी पाटोदी बड़नगर एवं अन्तिम चार दिन पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री, भिण्ड़ के समयसार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुए।

सभी कार्य पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा के निर्देशन में सम्पन्न हुए। **ह्न मनोहरलाल काला**

3. मुंबई (महा.) : श्री दिग. जैन मुमुक्षु समाज, बृहन्मुंबई द्वारा अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर मुंबई के विभिन्न उपनगरों में व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया; जिसमें प्रतिदिन प्रवचन, कक्षा एवं तत्त्वचर्चा आदि के माध्यम से समाज में निम्न विद्वानों द्वारा विशेष धर्मप्रभावना हुई ह्न

श्री सीमंधर जिनालय में पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर, **दादर में** पण्डित अरूणकुमारजी मोदी सागर, **बोरीवली में** पण्डित कस्तूरचंदजी जैन विदिशा, **भायंदर में** पण्डित कमलकुमारजी जैन पिड़ावा, **भिवंडी में** पण्डित चन्दुभाईजी मेहता फतेपुर, **दहीसर में** पण्डित हितेशजी शास्त्री चिचोली, **मलाड़ (वेस्ट) में** पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री, **मलाड़ (ईस्ट) में** पण्डित सुदीपजी शास्त्री बीना एवं पण्डित अनिलजी शास्त्री गोरेगांव के प्रवचन हुए।

ज्ञातव्य है कि अष्टाह्निका पर्व के एक सप्ताह पूर्व मलाड़ में पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री जयपुर द्वारा गोम्मटसार जीवकाण्ड पर लगभग पन्द्रह दिनों तक विशेष कक्षा का आयोजन किया गया।

4. टीकमगढ़ (म.प्र.) : यहाँ श्री दिग. जैन सीमन्धर जिनालय में पर्व के अवसर पर पण्डित कोमलचन्दजी जैन, टड़ा के तीनों समय मार्मिक प्रवचन हुए। **ह्न सुरेश जैन, मंत्री**

5. जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर दि. जिनमन्दिर, बड़ा फुहारा में पर्व के अवसर पर पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन, बिजौलिया के नियमसार परमागम पर मार्मिक प्रवचन हुए।

इस अवसर पर श्री नियमसार महामण्डल विधान का आयोजन हुआ; जिसके सम्पूर्ण कार्य पण्डित मनोजकुमारजी जैन एवं पण्डित श्रेणिकजी जैन ने सम्पन्न कराये।

अन्तिम दिन आभार प्रदर्शन पण्डित विरागजी शास्त्री ने किया। **- श्रेयांस शास्त्री**

6. गोहद (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव एवं सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, पण्डित चेतनजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित अभिनवजी शास्त्री मैनपुरी, पण्डित संदीपजी शास्त्री गोहद, पण्डित अजितजी जैन ग्वालियर एवं पण्डित राजेन्द्रजी पाटील एलिमुन्नोली द्वारा कक्षा, प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से समाज में धर्मप्रभावना हुई।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक एवं चेतनजी शास्त्री पिड़ावा द्वारा सम्पन्न कराये गये। **ह्न संदीप शास्त्री**

7.शिरडशहापुर (महा.) : यहाँ श्री नेमिनाथ दि. जैन मन्दिर में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर पण्डित प्रशांतकुमारजी शास्त्री के दोनों समय समयसार का सार एवं अष्टपाहुड ग्रन्थ पर सारगर्भित प्रवचन हुए।

सायंकाल बालकक्षा एवं जिनेन्द्रभक्ति के पश्चात् नाभिराजजी महाजन द्वारा प्रश्नमंच का आयोजन किया गया। **ह्न सुरेश काले**

8.लूणदा (राज.) : यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर में पर्व के अवसर पर पण्डित लक्ष्मीचन्दजी जैन डूंगरपुर एवं पण्डित चन्दुभाई जैन कुशलगढ़ के तीनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक पर सारगर्भित प्रवचन हुए। रात्रि में जिनेन्द्रभक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये। **ह्न ललित जैन**

(शेष पृष्ठ 5 पर .....)

शिक्षण शिविर पत्रिका

शिक्षण शिविर पत्रिका

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

1. **खनियाधांना (म.प्र.) :** यहाँ श्री नन्दीश्वर दिगम्बर जैन मन्दिर, चेतनबाग में दिनांक 12 से 20 जून, 2004 तक जैन संस्कार शिक्षण शिविर बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री के निर्देशन एवं बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन, खनियाधांना के सानिध्य में सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर, ब्र. अमितजी जैन विदिशा, पण्डित मांगीलालजी कोलारस, पण्डित ताराचन्दजी पटवारी, पण्डित शीतलजी शास्त्री नोगाँव, पण्डित संजयजी जैन खनियाधांना आदि अनेक विद्वानों के सानिध्य में पूजन, बालकक्षा, प्रौढ़कक्षा, प्रवचन आदि का लाभ समाज के सभी वर्गो को प्राप्त हुआ।

अन्तिम दिन सभी छात्रों की परीक्षा लेकर उन्हें समापन समारोह में योग्यतानुसार पुरस्कृत किया गया। **ह्न सुनील जैन, सरल**

2. **मौ (म.प्र.) :** यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान धर्मप्रभावक ट्रस्ट द्वारा बालकों में नैतिक संस्कार जागृत करने हेतु दिनांक 6 जून से 16 जून, 2004 तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में स्थानीय विद्वान ब्र. सत्येन्द्रजी जैन, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री, पण्डित विकासजी शास्त्री, पण्डित पवनजी शास्त्री, पण्डित प्रशान्तजी शास्त्री, पण्डित अजीतजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी शास्त्री के अतिरिक्त श्री कान्तिलालजी जैन, इन्दौर, पण्डित विनय जैन, पण्डित अभिषेकजी केलवाड़ा आदि विद्वानों ने बालकक्षा, प्रौढ़कक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से धर्मलाभ दिया।

इस अवसर पर पण्डित कैलाशचन्दजी जैन, अशोकनगरवालों के प्रवचनों का लाभ भी प्राप्त हुआ। **ह्न प्रशान्त जैन**

3. **टीकमगढ़ (म.प्र.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन सीमन्धर जिनालय में दिनांक 18 जून से 26 जून, 2004 तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर स्थानीय विद्वान पण्डित निपुणकुमारजी शास्त्री द्वारा कक्षा एवं प्रवचनों के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई। **ह्न प्रभात जैन**

वैराग्य समाचार

1.मेरठ (उ.प्र.) निवासी श्रीमती गुणमालाजी जैन का देहावसान हो गया है। आप धार्मिक एवं आध्यात्मिकरूचि सम्पन्न महिला थी।

इस अवसरपर आपके सुपुत्र श्री चन्द्रभूषणजी जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को जिनवाणी ध्रुवफण्ड हेतु 1100/-रुपये प्राप्त हुए; एतदर्थ धन्यवाद !

2.शहडोल (म.प्र.) निवासी श्री धर्मचन्दजी जैन, नायक का दिनांक 14 जून, 04 को देहावसान हो गया। आप अत्यन्त धर्मरूचि सम्पन्न थे। तत्त्वप्रचार-प्रसार में आपका सदैव सहयोग रहता था।

3.भोपाल (म.प्र.) निवासी श्री प्रभातजी पवैया पुत्र श्री स्व. बागमलजी पवैया का दिनांक 21 मई, 04 को देहावसान हो गया है।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही हमारी मंगल भावना है। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

प्रथम रविवारीय गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का नवीन सत्र एवं उसी के साथ विद्यालयीन समस्त गतिविधियाँ प्रारंभ हो चुकी हैं; जिसमें साप्ताहिक गोष्ठी की प्रमुख गतिविधि में प्रथम रविवारीय गोष्ठी दिनांक 4 जुलाई, 04 को **पूजन : एक अनुशीलन** विषय पर आयोजित की गई।

गोष्ठी की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, जयपुर ने की तथा मंगलाचरण विनय जैन, बून्दी ने किया।

गोष्ठी में उपाध्याय एवं शास्त्री वर्ग के कुल 10 वक्ता थे; जिसमें उपाध्याय वर्ग से अभिषेक जैन, केलवाड़ा एवं शास्त्री वर्ग से जितेन्द्र जैन, सिंगोडी ने श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया।

संचालन आशीष जैन, जबेरा ने किया। **ह्न भरत अलगौंडर**

वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण सानन्द सम्पन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री दि. जैन मन्दिर में दिनांक 22 मई से 24 मई 2004 तक वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

दिनांक 22 मई को झण्डारोहण श्री आनन्दकुमारजी जैन एवं विधान का उद्घाटन श्री विजयकुमारजी जैन ने किया।

इस अवसर पर विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अभिनन्दनजी शास्त्री खनियाधांना, पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री छिंदवाड़ा एवं पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर ने सम्पन्न कराये ।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी, पण्डित नेमीचन्दजी शास्त्री एवं पण्डित महावीरजी जैन के प्रवचनों का लाभ मिला।

धार्मिक शिविरों द्वारा सौराष्ट्र प्रान्त में धर्मप्रभावना

मंगलायतन : तीर्थधाम मंगलायतन द्वारा सौराष्ट्रप्रान्त के दो स्थानों पर धार्मिक शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में धर्मलाभ देने हेतु श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक पण्डित अनिलकुमारजी बेलोकर को भेजा गया।

आपके द्वारा दि. 20 से 24 जून, 04 तक गोंडल एवं दि. 25 से 28 जून, 04 तक जैतपुर में लघु शिविरों का आयोजन किया गया; जिसमें दोनों स्थानों पर जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्तों की जानकारी दी गई। प्रतिदिन प्रवचन, बालकक्षा, प्रौढ़कक्षा सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई। **ह्न संजय शास्त्री, बड़ामलहरा**

पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा धर्मप्रभावना

इण्डी (बिजापुर -कर्ना.) : समाज के विशेष आग्रह पर यहाँ पधारे श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के उप-प्राचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर द्वारा ग्रीष्मावकाश पर दिनांक 3 से 13 जून, 04 तक प्रात: लघु जैन सि. प्रवेशिका, दोपहर में परमभावप्रकाशक नयचक्र एवं रात्रि में समयसार पर अध्यात्मरसगर्भित मार्मिक प्रवचन हुए।

इसीप्रकार पुणे (महा.) में दि. 28 व 29 मई, 04 को एवं गृहनगर जयसिंगपुर (महा.) में भी 31 मई से 2 जून, 04 तक आपके विशिष्ट प्रवचनों द्वारा समाज में महती धर्मप्रभावना हुई।

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

12 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

गाथा–१७

मणुसत्तणेण णट्ठो देही देवो हवेदि इदरो वा।
उभयत्थ जीवभावो ण णस्सदि ण जायदे अणणो।।१७।।

(हरिगीत)

मनुज मर सुरलोक में देवादि पद धारण करें।
पर जीव दोनों दशा में ना नशे ना उत्पन्न हो।।१७।।

पिछली १६वीं गाथा में कह आये हैं कि जीवादि छहों द्रव्य भाव हैं, पदार्थ हैं तथा जीव का विशेष गुण ज्ञान–दर्शनरूप चेतना है तथा जीव की पर्यायें देव–मनुष्य–नारक–तिर्यंचरूप अनेक हैं।

इस गाथा में यह कहते हैं कि मनुष्यत्व से नष्ट हुआ जीव देव अथवा अन्य पर्यायरूप से उत्पन्न होता है। उन दोनों पर्यायों में जीव भाव नष्ट नहीं होता और दूसरे नवीन जीवरूप से उत्पन्न नहीं होता।

आचार्य अमृतचन्द्र ने टीका में जो कहा, उसका भाव यह है कि ह्न 'भाव अर्थात् सत् का कभी नाश नहीं होता और अभाव अर्थात् असत् का कभी उत्पाद नहीं होता। प्रतिसमय अगुरुलघुत्वगुण की हानि–वृद्धि से उत्पन्न होनेवाली स्वभाव पर्यायों की संतति का विच्छेद न करनेवाली एक सोपाधिक मनुष्यत्व पर्याय से जीव विनष्ट होता है और तथाविध देवत्वस्वरूप नारकत्वस्वरूप व तिर्यंत्वस्वरूप अन्य पर्यायों से उत्पन्न होता है; परन्तु जीवत्व से नष्ट नहीं होता और जीवत्व से उत्पन्न नहीं होता। सत् के उच्छेद और असत् के उत्पाद बिना ही स्वभाव एवं विभावरूप परिणमन करता है।'

कवि हीरानन्दजी ने इसी बात को हिन्दी पद्य में इसप्रकार कहा है ह्न

मनुष्यरूप करि नष्ट है, देव इतरगति होइ।
जीवभाव नासै नहीं, उपजै और न कोइ।।११२।।

आत्मा मनुष्यत्व से नष्ट और देवत्व से नष्ट एवं उत्पन्न होता है, जीवत्व से न कभी नष्ट होता है न उत्पन्न। तथा

जीवभाव उपजै नहीं, विनसै नाहि कदाच।
सदाकाल जग में लसै चेतनभाव अवाच।।११४।।

जीवद्रव्य जीवत्वरूप से न उत्पन्न होता है और न नष्ट होता है। जीव अपने जीवत्वभाव से त्रिकाल विद्यमान रहता है।

इसी गाथा १६ पर प्रवचन करते हुए गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने जो कहा, उसका सार यह है कि ह्न 'वस्तु का नाश तथा उत्पत्ति नहीं होती। मनुष्य पर्याय का व्यय होकर देव–नारकी–तिर्यंच और मनुष्य पर्याय उत्पन्न होती है।

यहाँ विशेष बात यह है कि जो देवादि पर्यायें होती हैं, वे तत्संबंधी नामकर्म के उदय से नहीं होती; परन्तु जीव की तत्समय की योग्यता के कारण होती हैं, स्वयं अस्तिकाय के सामर्थ्य से होती हैं। नामकर्म तो पुद्गलास्तिकाय है, जो जीव के परिणमन में निमित्त मात्र होता है। यदि पुद्गल के कारण जीव की पर्याय हो तब तो दोनों एक हो जायें; परन्तु ऐसा नहीं होता।

इसीप्रकार 'आयु पूर्ण होने से मनुष्य पर्याय छूट गई' यह भी निमित्त का कथन है। वस्तुत: तो अपनी योग्यता से मनुष्य पर्याय का त्यागकर देवपर्याय रूप होता है, इसमें एकसमय भी आगे–पीछे नहीं होता।'

गुरुदेव इसी गाथा के भाव को स्पष्ट करते हुए आगे कहते हैं कि ह्न अब आत्मा की अनादि–अनन्त शुद्ध पर्याय की बात करते हैं। स्वाभाविक षट्गुणी हानि–वृद्धिरूप जो अगुरुलघुपर्याय धारावाही अखंडित त्रिकाल समयवर्ती है, वह जीव की शुद्ध पर्याय है। यहाँ इसी शुद्ध र्याय की बात कह रहे हैं।बता रहे हैं कि जीवास्तिकाय में शुद्ध और अशुद्ध दो तरह की पर्यायें होती हैं।

'जीव पर्याय से पर्यायान्तर रूप होकर जो शुद्ध या अशुद्धरूप उपजता–विनशता है; वह कर्म के कारण नहीं; बल्कि अपनी तत्समय की योग्यता से ही उपजता–विनशता है।'

इस गाथा का सारांश इतना है कि ह्न जीव द्रव्यरूप से त्रिकाल सत्त्वरूप रहकर अपनी पर्यायगत योग्यता से और निरन्तर परिणमनशील स्वभाव के कारण स्वत: ही नाना पर्यायरूप सेबदलता है। मनुष्य, देव, नारक आदि पर्यायों में जो जन्मता–मरता रहता है, उपजता–विनशता रहता है। वह अपनी स्वतंत्र तत्समय की योग्यता से नष्ट एवं उत्पन्न होता है, कर्म के कारण नहीं।

यद्यपि नाना पर्यायों रूप परिणमन में आयु और नाम कर्मों का उदय निमित्त होता; परन्तु जीव की तत्समय की योग्यता बिना निमित्तरूप परद्रव्य जीव की पर्यायों को पलटते नहीं हैं। जीव की निर्मल पर्यायें तो स्वयं से स्वाधीनपने होती ही हैं, मलिन पर्यायें भी स्वाधीनपने ही होती हैं; कर्मरूप परद्रव्य तो निमित्तमात्र होते हैं, वे विकार के कर्ता नहीं हैं। ●

(हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न...पृष्ठ–1 का शेष)

9. **करेली (म.प्र.):** यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर में पर्व के अवसर पर श्री नियमसार मण्डल विधान का आयोजन किया गया; जिसमें पण्डित आदित्य जैन, खुरई के दोनों समय प्रवचन हुए। **ह्न प्रवेश भारिल्ल**

10. **सोलापुर (महा.) :** यहाँ श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर में पर्व के अवसर पर श्री तीनलोक महामण्डल विधान का आयोजन हुआ।

विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित विक्रान्तजी शहा सोलापुर ने सम्पन्न कराये। प्रतिदिन दोनों समय पण्डित राजकुमारजी आलंदकर एवं पण्डित विक्रान्तजी शहा के प्रवचनों का लाभ मिला। **ह्न प्रशान्त मोहरे**

11. **छपरौली (उ.प्र.):** यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर में पर्व के अवसर पर पण्डित चैतन्यजी सातपुते के दोनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक पर सारगर्भित प्रवचन हुए। पण्डित दीपकजी डांगे ने द्रव्यसंग्रह की कक्षा ली।

12. **मेरठ (महा.):** यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर में पर्व के अवसर पर श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुनीलकुमारजी बेलोकर, सुल्तानपुर द्वारा सम्पन्न कराये गये।

इस अवसर पर पण्डित सुबोधचन्दजी सिंघई, सिवनी के प्रारंभ के चार दिन दोनों समय सारगर्भित प्रवचन हुए। तथा पण्डित मनोजकुमारजी शास्त्री, अभाना के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुए। आपके द्वारा गुणस्थान विवेचन पर कक्षा भी ली गई। पण्डित शाकुलजी जैन द्वारा बालकक्षा का आयोजन किया गया। **ह्न नवनीत जैन**

शिक्षण शिविर पत्रिका

शिक्षण शिविर पत्रिका

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

अमरकंटक के निकटवर्ती 12 स्थानोंपर विशाल धार्मिक ग्रुप शिविर सानन्द सम्पन्न

श्री अहिंसा संस्कार समिति के तत्त्वावधान में अमरकंटक (म.प्र.) के निकटवर्ती शहडोल, अनूपपुर, उमरिया, कटनी एवं छत्तीसगढ़ के बिलासपुर एवं कोरबा जिलों के 12 विभिन्न स्थानों पर दिनांक 15 जून से 23 जून, 2004 तक विशाल धार्मिक ग्रुप शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ।

छह जिलों के 12 स्थानों पर निम्नानुसार विद्वानों ने समाज को लाभान्वित किया ह्न

1) शहडोल : पण्डित अभय शास्त्री, खडैरी **2) बडगाँव :** पण्डित जितेन्द्र शास्त्री, खडैरी **3) उमरिया :** पण्डित जितेन्द्र शास्त्री, सिंगोडी **4) जैतहरी :** पण्डित आदित्य शास्त्री, खुरई **5) पेन्ड्रा रोड (गोरिल्ला) :** पण्डित सचिन्द्र शास्त्री, गढ़ाकोटा **6) पेन्ड्रा :** पण्डित प्रवेश शास्त्री, करेली **7) बिजुरी :** पण्डित प्रमेश शास्त्री, जबेरा **8) मनेन्द्रगढ़ :** पण्डित भानु शास्त्री, खडैरी **9) चिरमिरी (छोटी बजरीया):** पण्डित अजीत शास्त्री, मौ **10)चिरमिरी (हल्दीवाड़ी) :** पण्डित आशीष शास्त्री, मौ **11) जनकपुर :** पण्डित विमोश शास्त्री, खडैरी **12) व्यवहारी:** पण्डित चेतन शास्त्री खडैरी एवं पण्डित नितिन शास्त्री, खडैरी द्वारा महती धर्मप्रभावना हुई।

शिविर में बालकक्षा में अहिंसा पाठमाला, प्रौढ़कक्षा में छहढ़ाला, भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र एवं प्रवचनों में रत्नकरण्ड श्रावकाचार, क्रमबद्धपर्याय, नयचक्र, अहिंसा, शाकाहार आदि विविध विषयों पर तीन-तीन समय कक्षा एवं प्रवचनादि हुये।

शिविर में मुख्य आकर्षण पूजन प्रशिक्षण रहा; जिसके माध्यम से लगभग 700 बालकों ने प्रक्षाल, अष्टद्रव्य से पूजन विधि आदि की शिक्षा प्राप्त की। अनेक लोगों ने शाकाहार प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता एवं कण्ठपाठ प्रतियोगिता द्वारा जिणवानी को कण्ठ में धारण किया।

शिविर में प्रवचन, पूजन, कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा लगभग 1050 विद्यार्थी एवं 1500 साधर्मी भाई-बहिन लाभान्वित हुए। सात स्थानों पर नियमित पाठशालायें प्रारंभ की गई। अनेक भाई-बहिनों ने प्रतिदिन स्वाध्याय, रात्रिभोजन-जमीकंद त्याग, देवदर्शन आदि की प्रतिज्ञायें ली।

शिविर के संयोजक पण्डित अभिषेकजी शास्त्री रहली एवं पण्डित पंकजजी शास्त्री खडैरी तथा शिविर प्रभारी के रूप में श्रीमती सुषमा जैन, शहडोल एवं श्रीमती कल्पना जैन शहडोल ने विशेष सहयोग दिया।

शिविर में कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, अहिंसा चेरि. ट्रस्ट मुंबई, अहिंसा संस्कार समिति शहडोल, अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा रहली एवं करेली, जैन युवा शास्त्री परिषद खडैरी तथा अ. भा. महिला मण्डल दिल्ली का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

23 जून 2004 को श्री चन्द्रप्रभ जिनालय शहडोल में अहिंसा संस्कार समिति के अध्यक्ष श्री शिखरचन्दजी एवं श्री कोमलचन्दजी जैन शहडोल की अध्यक्षता में सामूहिक समापन समारोह का आयोजन किया गया; जिसमें सभी स्थानों के प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त छात्रों एवं स्थानीय प्रभारियों को पुरस्कार आदि देकर सम्मानित किया। **ह्न अभिषेक जैन, रहली**

बाल संस्कार शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

देवलाली (नासिक) : श्री दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल बृहन्मुंबई के तत्त्वावधान में पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के प्रांगण में अप्रैल माह में बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा, पण्डित संजयजी शास्त्री नागपुर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित मेहुलजी मेहता कोलकाता, पण्डित चिदानन्दजी जैन अशोकनगर, ब्र. चेतनाबेन, ब्र. प्रतीतिबेन ब्र. श्रद्धाबेन एवं कु. जयश्री द्वारा आठ से चौदह वर्ष के लगभग 310 बालकों में नैतिक एवं धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण किया गया।

श्री टोडरमल दि. जैन सि. महा. के छात्रों का सुयश

1) श्री सुधाकर इण्डी शास्त्री, बोरगांव (कर्नाटक) ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के तत्त्वावधान में संस्थापित ''राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, दिल्ली'' द्वारा आयोजित शिक्षा-शास्त्री (बी. एड.) की सात केन्द्रों पर सम्पन्न हुई परीक्षा 2004 में श्रृंगेरी केन्द्र से 83% अंक प्राप्त कर सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

2) श्री श्रेयांसकुमार शास्त्री जबलपुर (म.प्र.) ने रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर से एम.ए. (संस्कृत) परीक्षा 2004 में 74% अंक प्राप्त कर विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

इस उपलक्ष में विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में राज्यपाल द्वारा स्वर्णपदक एवं म.प्र. की शिक्षा मंत्री श्रीमती अल्का जैन द्वारा विशेष पुरस्कार भी प्रदान किया जायेगा।

जैनपथप्रदर्शक एवं महाविद्यालय परिवार आप दोनों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जुलाई (द्वितीय) 2004

J. P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास ❊ **पं. जितेन्द्र वि.राठी शास्त्री**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127